

Quick word tests

| | | | | | | | | | | | |
|---------------|---------------|---------------|---------------|------------|------------|---------------|---------------|--------------|--------------|------------|------------|
| तरक्क्री | तरक्क्री | आह्लाद | आह्लाद | फ्रीज | फ्रीज | मगज़ | मगज़ | हृत्स्थल | हृत्स्थल | सिर्फ | सिर्फ |
| ज़्यादा | ज़्यादा | ब्राह्मण | ब्राह्मण | हितिक | हितिक | सम्यग्ज्ञान | सम्यग्ज्ञान | ज्योत्स्ना | ज्योत्स्ना | व्हिस्की | व्हिस्की |
| मन्ज़ूर | मन्ज़ूर | मिस्त्री | मिस्त्री | एल्जे | एल्जे | दिग्दर्शन | दिग्दर्शन | ईषत्स्पृष्ट | ईषत्स्पृष्ट | इश्क | इश्क |
| इलेक्ट्रान | इलेक्ट्रान | दुष्प्रह्य | दुष्प्रह्य | उत्प | उत्प | पंक्ति | पंक्ति | उत्सुत | उत्सुत | प्रश्न | प्रश्न |
| स्ट्रीटकार | स्ट्रीटकार | अद्भुत | अद्भुत | उत्प | उत्प | मंगलवार | मंगलवार | सद्गति | सद्गति | रुश्द | रुश्द |
| छुट्टी | छुट्टी | इल्ज़ाम | इल्ज़ाम | रत्न | रत्न | दुर्लभ्य | दुर्लभ्य | सद्गन्ध | सद्गन्ध | वैशिष्ट्य | वैशिष्ट्य |
| महाराष्ट्र | महाराष्ट्र | अक्षरे | अक्षरे | सज़्स | सज़्स | पच्चीस | पच्चीस | उद्घाटन | उद्घाटन | ओष्ठ्य | ओष्ठ्य |
| ज्येष्ठ | ज्येष्ठ | ज्ञान | ज्ञान | एज्जा | एज्जा | अच्छा | अच्छा | ज़िद्दी | ज़िद्दी | मिस्त्री | मिस्त्री |
| दर्शात | दर्शात | मौके | मौके | ब्यर्थे | ब्यर्थे | उज्ज | उज्ज | प्रसिद्ध | प्रसिद्ध | आह्वान | आह्वान |
| चिट्ठी | चिट्ठी | कैंटोमेंट | कैंटोमेंट | तरक्क्री | तरक्क्री | संस्कृत | संस्कृत | उद्बोध | उद्बोध | आह्लाद | आह्लाद |
| वाङ्मय | वाङ्मय | छूट कुछ | छूट कुछ | फ़ैक्चर | फ़ैक्चर | हिंस | हिंस | द्रव | द्रव | हास | हास |
| वैशिष्ट्य | वैशिष्ट्य | करेंट | करेंट | डॉक्टर | डॉक्टर | छुट्टी | छुट्टी | दारिद्र्य | दारिद्र्य | अंकुड़ा | अंकुड़ा |
| पुनस्स्थापना | पुनस्स्थापना | राष्ट्रून | राष्ट्रून | इलेक्ट्रॉन | इलेक्ट्रॉन | चिट्ठी | चिट्ठी | अधुव | अधुव | अंतर्निहित | अंतर्निहित |
| स्वास्थ्य | स्वास्थ्य | काँफी | काँफी | रक्त | रक्त | विशाखपटनम | विशाखपटनम | मंज़ूर | मंज़ूर | अन्तः | अन्तः |
| कम्प्यूटर | कम्प्यूटर | हिंदू-मुस्लिम | हिंदू-मुस्लिम | वक्त्र | वक्त्र | ट्रेन | ट्रेन | मंज़ी | मंज़ी | अंतर्वेशन | अंतर्वेशन |
| सान्ध्य | सान्ध्य | करणाया | करणाया | युक्त्यभास | युक्त्यभास | सुपाठ्य | सुपाठ्य | स्वातंत्र्य | स्वातंत्र्य | अग्नि | अग्नि |
| इज़्ज़त | इज़्ज़त | स्नेह | स्नेह | वक्त्र | वक्त्र | लड्डू | लड्डू | द्वंद्व | द्वंद्व | अद्भुत | अद्भुत |
| उज्ज्वल | उज्ज्वल | श्री | श्री | शुक्ल | शुक्ल | ब्रह्मण्य | ब्रह्मण्य | उन्नीस | उन्नीस | छुछुंदर | छुछुंदर |
| प्राप्त्याशा | प्राप्त्याशा | स्त्री | स्त्री | रिक्शा | रिक्शा | उत्क्रम | उत्क्रम | इंस्टिट्यूट | इंस्टिट्यूट | हुंकार | हुंकार |
| इकत्तीस | इकत्तीस | ध्यां | ध्यां | पक्ष | पक्ष | उत्क्षेप | उत्क्षेप | उन्हें | उन्हें | हित इच्छुक | हित इच्छुक |
| सत्रह | सत्रह | शक्ति | शक्ति | लक्ष्मी | लक्ष्मी | विद्युत्प्रहक | विद्युत्प्रहक | दीन्हो | दीन्हो | कुरी | कुरी |
| पद्म | पद्म | महाराष्ट्र | महाराष्ट्र | अभक्ष्य | अभक्ष्य | महत्त्व | महत्त्व | नैप्स्यून | नैप्स्यून | कुल्हिया | कुल्हिया |
| विद्यार्थी | विद्यार्थी | कट्टू | कट्टू | दिक्स्थापन | दिक्स्थापन | पत्थर | पत्थर | प्राप्त | प्राप्त | | |
| उन्नीस | उन्नीस | रूप | रूप | सख्त | सख्त | विद्युत्दर्शी | विद्युत्दर्शी | सब्जी | सब्जी | | |
| पश्चिम | पश्चिम | हूँ | हूँ | अख्यार | अख्यार | पत्नी | पत्नी | छब्बीस | छब्बीस | | |
| श्रीलंका | श्रीलंका | बुत्तो | बुत्तो | ज़ख्म | ज़ख्म | सपत्न्य | सपत्न्य | मार्किट | मार्किट | | |
| विश्वविद्यालय | विश्वविद्यालय | बार्गी | बार्गी | ख्रिष्टां | ख्रिष्टां | उत्प्रवास | उत्प्रवास | दुर्ज्ञेय | दुर्ज्ञेय | | |
| स्नान | स्नान | कुंग | कुंग | फ़ख्र | फ़ख्र | ल्याहिक | ल्याहिक | उर्दू | उर्दू | | |
| बुद्ध | बुद्ध | हूप | हूप | अग्रास | अग्रास | विद्युतशक्ति | विद्युतशक्ति | निर्द्वन्द्व | निर्द्वन्द्व | | |

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूँढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूँढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके,
मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा
निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत,
चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क
बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में
मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के
सामने लगे 'प्रियंका-
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के लिए
ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध
बच्चियों से दुष्कर्म

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके,
मिडकैप-स्मॉलकैप में
उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा
निकालने पर देना होगा
टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की
मेहनत, चीन से आया
तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद
शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़
में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के
सामने लगे 'प्रियंका-
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के
लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो
अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगा-पिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़ें - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़ें - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date: Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date: Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमांस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1 वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमांस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमांस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1 वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमांस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत सफलता है और शानदार अहसास है। केकेआर का हिस्सा बनकर बहुत अच्छा महसूस होता है और

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रैंड फैशन इंवेट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों चड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नही होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस दब से होता, इस बखेड़े को

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट ॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान ॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों चड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नही होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसँ भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसँ भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

pg 7/18

पपरुपवपवरुवव
पपरूपवपवरूवव
पपदुपवपवदुवव
पपदूपवपवदूवव
पपदृपवपवदृवव

Vowel sign spacing

पपपंपपपंपपकंपप
पपपॅपपपॅपकॅपप
पपपँपपपँपकँपप
पपपँपपपँपकँपप
पपपैपपपैपकैपप
पपपेपपपेपकैपप
पपपेपपपेपकैपप
पपपेपपपेपकैपप
पपपेपपपेपकैपप
पपपेपपपेपकैपप
पपपेपपपेपकैपप
पपपेपपपेपकैपप
पपपेपपपेपकैपप
पपपेपपपेपकैपप
पपपेपपपेपकैपप

पपपापपरापपकापप
पपपिपपरिपपकिपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपापपरापपकापप
पपपापपरापपकापप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप

पपपौपपरीपपकौपप
पपपौपपरीपपकौपप
पपपौपपरीपपकौपप

पपपुपपरुपपकुपप
पपपूपपरुपपकूपप
पपपृपपरुपपकृपप
पपपृपपरुपपकृपप
पपपृपपरुपपकृपप
पपपृपपरुपपकृपप
पपपृपपरुपपकृपप

पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप

पपपऽपवपववऽवव
पप?पवपव?वव
पपपःपवपववःवव

Numeral spacing

००००१०१०११
००१०१०११११
००२०१०१२११
००३०१०१३११
००४०१०१४११
००५०१०१५११
००६०१०१६११
००७०१०१७११
००८०१०१८११
००९०१०१९११

Letter-punct spacing

पपक, पवक.
पपख, पवख.
पपग, पवग.
पपघ, पवघ.
पपङ, पवङ.
पपच, पवच.
पपछ, पवछ.
पपज, पवज.
पपझ, पवझ.
पपञ, पवञ.
पपट, पवट.
पपठ, पवठ.
पपड, पवड.
पपढ, पवढ.
पपण, पवण.
पपत, पवत.
पपथ, पवथ.
पपद, पवद.
पपध, पवध.
पपन, पवन.
पपप, पवप.

पपफ, पवफ.
पपब, पवब.
पपभ, पवभ.
पपम, पवम.
पपय, पवय.
पपर, पवर.
पपल, पवल.
पपळ, पवळ.
पपव, पवव.
पपश, पवश.
पपष, पवष.
पपस, पवस.
पपह, पवह.
पपक्र, पवक्र.
पपख, पवख.
पपग, पवग.
पपज, पवज.
पपङ, पवङ.
पपढ, पवढ.
पपफ़, पवफ़.
पपय़, पवय़.
पपक्ष, पवक्ष.
पपज्ञ, पवज्ञ.

पपअ, पवअ.
पपओ, पवओ.
पपऑ, पवऑ.
पपइ, पवइ.
पपई, पवई.
पपउ, पवउ.
पपऊ, पवऊ.
पपए, पवए.
पपऐ, पवऐ.
पपऐ, पवऐ.
पपऐ, पवऐ.

पपआ, पवआ.
पपओ, पवओ.
पपऔ, पवऔ.
पपक्र, पवक्र.
पपक्र, पवक्र.
पपल, पवल.
पपल, पवल.

पपझ, पवझ.
पपछ, पवछ.
पपट, पवट.
पपट, पवट.
पपड, पवड.
पपढ, पवढ.
पपट, पवट.
पपट, पवट.
पपट, पवट.
पपट, पवट.
पपट, पवट.
पपट, पवट.
पपट, पवट.
पपट, पवट.
पपट, पवट.

पपत्त, पवत्त.
पपर, पवर.
पपर, पवर.
पपट, पवट.
पपट, पवट.
पपट, पवट.
पपट, पवट.
पपट, पवट.
पपट, पवट.
पपट, पवट.
पपट, पवट.
पपट, पवट.
पपट, पवट.
पपट, पवट.
पपट, पवट.

पपद्, पवद्.
पपष्ट, पवष्ट.
पपभ, पवभ.
पपष्ठ, पवष्ठ.
पपल्ज, पवलज.
पपल्ल, पवल्ल.
पपल्ल, पवल्ल.
पपल्ल, पवल्ल.
पपल्ल, पवल्ल.

पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.

-
पपक; पवक:
पपख; पवख:
पपग; पवग:
पपघ; पवघ:
पपङ; पवङ:
पपच; पवच:
पपछ; पवछ:
पपज; पवज:
पपझ; पवझ:
पपञ; पवञ:
पपट; पवट:
पपठ; पवठ:

| | | | | | | |
|---------------|---------------|---------------|---------------|---------------|---------------|-------------|
| पपड; पवडः | पपअँ; पवअँः | पपडू; पवडूः | पपघ। पवघः | पपड़। पवड़ः | पपह। पवहः | पपरू। पवरूः |
| पपढ; पवढः | पपइ; पवइः | पपडू; पवडूः | पपङ। पवङः | पपढ़। पवढ़ः | पपळ। पवळः | पपटु। पवटुः |
| पपण; पवणः | पपई; पवईः | पपडू; पवडूः | पपच। पवचः | पपफ़। पवफ़ः | | पपटू। पवटूः |
| पपत; पवतः | पपउ; पवउः | पपद्ध; पवद्धः | पपछ। पवछः | पपय़। पवय़ः | पपक्त। पवक्तः | पपटृ। पवटृः |
| पपथ; पवथः | पपऊ; पवऊः | पपद्ग; पवद्गः | पपज। पवजः | पपक्ष। पवक्षः | पपरू। पवरूः | - |
| पपद; पवदः | पपए; पवएः | पपद्ध; पवद्धः | पपझ। पवझः | पपज्ञ। पवज्ञः | पपरू। पवरूः | |
| पपध; पवधः | पपऐ; पवऐः | पपद्ध; पवद्धः | पपञ। पवञः | | पपटृ। पवटृः | पपक। पवक? |
| पपन; पवनः | पपऐँ; पवऐँः | पपद्ध; पवद्धः | पपट। पवटः | पपअ। पवअः | पपटृ। पवटृः | पपख। पवख? |
| पपप; पवपः | पपऐँ; पवऐँः | पपद्ध; पवद्धः | पपठ। पवठः | पपअँ। पवअँः | पपटृ। पवटृः | पपग। पवग? |
| पपफ; पवफः | पपआ; पवआः | पपद्द; पवद्दः | पपड। पवडः | पपअँ। पवअँः | पपडू। पवडूः | पपघ। पवघ? |
| पपब; पवबः | पपओ; पवओः | पपष्ट; पवष्टः | पपढ। पवढः | पपइ। पवइः | पपडू। पवडूः | पपङ। पवङ? |
| पपभ; पवभः | पपऔ; पवऔः | पपम्भ; पवम्भः | पपण। पवणः | पपई। पवईः | पपडू। पवडूः | पपच। पवच? |
| पपम; पवमः | पपऋ; पवऋः | पपष्ठ; पवष्ठः | पपत। पवतः | पपउ। पवउः | पपद्ध। पवद्धः | पपछ। पवछ? |
| पपय; पवयः | पपऋ; पवऋः | पपलज; पवलजः | पपथ। पवथः | पपऊ। पवऊः | पपद्ग। पवद्गः | पपज। पवज? |
| पपर; पवरः | पपलृ; पवलृः | पपल्ल; पवल्लः | पपद। पवदः | पपए। पवएः | पपद्ध। पवद्धः | पपझ। पवझ? |
| पपल; पवलः | पपलृ; पवलृः | पपल्ल; पवल्लः | पपध। पवधः | पपऐ। पवऐः | पपद्ध। पवद्धः | पपञ। पवञ? |
| पपळ; पवळः | | पपल्ल; पवल्लः | पपन। पवनः | पपऐँ। पवऐँः | पपद्ध। पवद्धः | पपट। पवट? |
| पपव; पववः | | पपल्ल; पवल्लः | पपप। पवपः | पपऐँ। पवऐँः | पपद्ध। पवद्धः | पपठ। पवठ? |
| पपश; पवशः | पपड्र; पवड्रः | | पपफ। पवफः | पपआ। पवआः | पपद्द। पवद्दः | पपड। पवड? |
| पपष; पवषः | पपछ; पवछः | पपहु; पवहुः | पपब। पवबः | पपओ। पवओः | पपष्ट। पवष्टः | पपढ। पवढ? |
| पपस; पवसः | पपट्र; पवट्रः | पपहू; पवहूः | पपभ। पवभः | पपऔ। पवऔः | पपम्भ। पवम्भः | पपण। पवण? |
| पपह; पवहः | पपट्र; पवट्रः | पपहू; पवहूः | पपम। पवमः | पपऋ। पवऋः | पपष्ठ। पवष्ठः | पपत। पवत? |
| पपक्र; पवक्रः | पपड्र; पवड्रः | पपहू; पवहूः | पपय। पवयः | पपऋ। पवऋः | पपलज। पवलजः | पपथ। पवथ? |
| पपख; पवखः | पपद्र; पवद्रः | पपहु; पवहुः | पपर। पवरः | पपलृ। पवलृः | पपल्ल। पवल्लः | पपद। पवद? |
| पपग; पवगः | पपद्र; पवद्रः | पपहू; पवहूः | पपल। पवलः | पपलृ। पवलृः | पपल्ल। पवल्लः | पपध। पवध? |
| पपज; पवजः | पपरू; पवरूः | पपरू; पवरूः | पपळ। पवळः | | पपल्ल। पवल्लः | पपन। पवन? |
| पपड़; पवड़ः | पपह; पवहः | पपरू; पवरूः | पपव। पववः | पपड्र। पवड्रः | पपल्ल। पवल्लः | पपप। पवप? |
| पपढ़; पवढ़ः | पपळ; पवळः | पपटु; पवटुः | पपश। पवशः | पपछ। पवछः | | पपफ। पवफ? |
| पपफ़; पवफ़ः | | पपटू; पवटूः | पपष। पवषः | पपट्र। पवट्रः | पपहु। पवहुः | पपब। पवब? |
| पपय़; पवय़ः | पपक्त; पवक्तः | पपटृ; पवटृः | पपस। पवसः | पपट्र। पवट्रः | पपहू। पवहूः | पपभ। पवभ? |
| पपक्ष; पवक्षः | पपरू; पवरूः | पपट्र; पवट्रः | पपह। पवहः | पपड्र। पवड्रः | पपह। पवहः | पपम। पवम? |
| पपज्ञ; पवज्ञः | पपरू; पवरूः | - | पपक्र। पवक्रः | पपद्र। पवद्रः | पपहू। पवहूः | पपय। पवय? |
| | पपटृ; पवटृः | पपक। पवकः | पपख। पवखः | पपद्र। पवद्रः | पपहु। पवहुः | पपर। पवर? |
| पपअ; पवअः | पपट्र; पवट्रः | पपख। पवखः | पपग। पवगः | पपरू। पवरूः | पपहू। पवहूः | पपल। पवल? |
| पपअँ; पवअँः | पपट्र; पवट्रः | पपग। पवगः | पपज। पवजः | | पपरू। पवरूः | पपळ। पवळ? |

| | | | | | | |
|---------------|----------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|
| पपव! पवव? | पपइ! पवइ? | | पपफ-फपव | पपआ-आपव | पपद्-दपव | "डपवपड" |
| पपश! पवश? | पपछ! पवछ? | | पपब-बपव | पपओ-ओपव | पपष्ट-ष्टपव | "ढपवपढ" |
| पपष! पवष? | पपट! पवट? | पपहु! पवहु? | पपभ-भपव | पपऔ-औपव | पपभ-भपव | "णपवपण" |
| पपस! पवस? | पपट्र! पवट्र? | पपह! पवह? | पपम-मपव | पपऋ-ऋपव | पपष्ठ-ष्ठपव | "तपवपत" |
| पपह! पवह? | पपड्र! पवड्र? | पपह! पवह? | पपय-यपव | पपऋ-ऋपव | पपल्ज-ल्जपव | "थपवपथ" |
| पपक्र! पवक्र? | पपद्र! पवद्र? | पपहु! पवहु? | पपर-रपव | पपलृ-लृपव | पपल्ल-ल्लपव | "दपवपद" |
| पपख! पवख? | पपद्र! पवद्र? | पपहु! पवहु? | पपल-लपव | पपलृ-लृपव | पपल्ल-ल्लपव | "धपवपध" |
| पपग! पवग? | पपरु! पवरु? | पपरु! पवरु? | पपळ-ळपव | | पपल्ल-ल्लपव | "नपवपन" |
| पपज! पवज? | पपह! पवह? | पपरु! पवरु? | पपव-वपव | पपइ-इपव | पपल्ल-ल्लपव | "पपवपप" |
| पपड़! पवड़? | पपळ! पवळ? | पपदु! पवदु? | पपश-शपव | पपछ-छपव | | "फपवपफ" |
| पपढ़! पवढ़? | | पपदू! पवदू? | पपष-षपव | पपट्र-ट्रपव | पपहु-हुपव | "बपवपब" |
| पपफ! पवफ? | पपक्त! पवक्त? | पपदृ! पवदृ? | पपस-सपव | पपट्र-ट्रपव | पपहू-हूपव | "भपवपभ" |
| पपय! पवय? | पपरु! पवरु? | | पपह-हपव | पपइ-इपव | पपह-हपव | "मपवपम" |
| पपक्ष! पवक्ष? | पपरु! पवरु? | - | पपक्र-क्रपव | पपद्र-द्रपव | पपह-हपव | "यपवपय" |
| पपज्ञ! पवज्ञ? | पपट्र! पवट्र? | पपक-कपव | पपख-खपव | पपद्र-द्रपव | पपहु-हुपव | "रपवपर" |
| | पपट्र! पवट्र? | पपख-खपव | पपग-गपव | पपर-रपव | पपहू-हूपव | "लपवपल" |
| पपअ! पवअ? | पपठु! पवठु? | पपग-गपव | पपज-जपव | पपह-हपव | पपरु-रूपव | "ळपवपळ" |
| पपअ! पवअ? | पपडु! पवडु? | पपघ-घपव | पपड़-ड़पव | पपळ-ळपव | पपरु-रूपव | "वपवपव" |
| पपअ! पवअ? | पपडु! पवडु? | पपङ-ङपव | पपढ़-ढ़पव | | पपदु-दुपव | "शपवपश" |
| पपइ! पवइ? | पपडु! पवडु? | पपच-चपव | पपफ-फपव | पपक्त-क्तपव | पपदू-दूपव | "षपवपष" |
| पपई! पवई? | पपडु! पवडु? | पपछ-छपव | पपय-यपव | पपरु-रूपव | पपदृ-दृपव | "सपवपस" |
| पपउ! पवउ? | पपद्र! पवद्र? | पपज-जपव | पपक्ष-क्षपव | पपऋ-रूपव | | "हपवपह" |
| पपऊ! पवऊ? | पपद्र! पवद्र? | पपझ-झपव | पपज्ञ-ज्ञपव | पपट्र-ट्रपव | - | "क्रपवपक्र" |
| पपए! पवए? | पपद्र! पवद्र? | पपञ-ञपव | | पपट्र-ट्रपव | "कपवपक" | "खपवपख" |
| पपऐ! पवऐ? | पपद्र! पवद्र? | पपट-टपव | पपअ-अपव | पपठ-ठपव | "खपवपख" | "गपवपग" |
| पपऐ! पवऐ? | पपद्र! पवद्र? | पपठ-ठपव | पपअ-अपव | पपडु-डुपव | "गपवपग" | "जपवपज" |
| पपऐ! पवऐ? | पपद्र! पवद्र? | पपड-डपव | पपअ-अपव | पपडु-डुपव | "घपवपघ" | "डपवपड" |
| पपआ! पवआ? | पपष्ट! पवष्ट? | पपढ-ढपव | पपइ-इपव | पपडु-डुपव | "डपवपड" | "ढपवपढ" |
| पपओ! पवओ? | पपभ! पवभ? | पपण-णपव | पपई-ईपव | पपडु-डुपव | "चपवपच" | "क्रपवपक्र" |
| पपऔ! पवऔ? | पपष्ठ! पवष्ठ? | पपत-तपव | पपउ-उपव | पपडु-डुपव | "छपवपछ" | "यपवपय" |
| पपऋ! पवऋ? | पपल्ज! पवल्लज? | पपथ-थपव | पपऊ-ऊपव | पपद्र-द्रपव | "जपवपज" | "क्षपवपक्ष" |
| पपऋ! पवऋ? | पपल्ल! पवल्ल? | पपद-दपव | पपए-एपव | पपद्र-द्रपव | "झपवपझ" | "ज्ञपवपज्ञ" |
| पपलृ! पवल्ल? | पपल्ल! पवल्ल? | पपध-धपव | पपऐ-ऐपव | पपद्र-द्रपव | "जपवपज" | |
| पपलृ! पवल्ल? | पपल्ल! पवल्ल? | पपन-नपव | पपऐ-ऐपव | पपद्र-द्रपव | "टपवपट" | "अपवपअ" |
| | पपल्ल! पवल्ल? | पपप-पपव | पपऐ-ऐपव | पपद्र-द्रपव | "ठपवपठ" | "औपवपऔ" |

| | | | |
|-------------|-------------|-------------------|----------------------|
| "अँपवपअँ" | "डुपवपडु" | Num-punct spacing | li Vowel sign - base |
| "इपवपइ" | "ढुपवपढु" | | |
| "ईपवपई" | "द्वपवपद्व" | पवप ₹१०१ वपव | पपकिपपकिंपपकिंपप |
| "उपवपउ" | "द्वपवपद्व" | पवप ₹२०१ वपव | पपखिपपखिंपपखिंपप |
| "ऊपवपऊ" | "द्वपवपद्व" | पवप ₹३०१ वपव | पपगिपपगिंपपगिंपप |
| "एपवपए" | "द्वपवपद्व" | पवप ₹४०१ वपव | पपघिपपघिंपपघिंपप |
| "ऐपवपऐ" | "द्वपवपद्व" | पवप ₹५०१ वपव | पपडिपपडिंपपडिंपप |
| "ऐपवपऐवव" | "द्वपवपद्व" | पवप ₹६०१ वपव | पपचिपपचिंपपचिंपप |
| "ऐपवपऐ" | "द्वपवपद्व" | पवप ₹७०१ वपव | पपछिपपछिंपपछिंपप |
| "आपवपआ" | "ष्टपवपष्ट" | पवप ₹८०१ वपव | पपजिपपजिंपपजिंपप |
| "ओपवपओ" | "भपवपभ" | पवप ₹९०१ वपव | पपझिपपझिंपपझिंपप |
| "औपवपऔ" | "ष्टपवपष्ट" | | पपञिपपञिंपपञिंपप |
| "ऋपवपऋ" | "लजपवपलज" | ०००,०१०,०११ | पपटिपपटिंपपटिंपप |
| "ऋपवपऋ" | "लपवपल" | ००१,०१०,१११ | पपठिपपठिंपपठिंपप |
| "लृपवपलृ" | "लपवपल" | ००२,०१०,२११ | पपडिपपडिंपपडिंपप |
| "लृपवपलृ" | "लपवपल" | ००३,०१०,३११ | पपढिपपढिंपपढिंपप |
| | "लपवपल" | ००४,०१०,४११ | पपणिपपणिंपपणिंपप |
| "ड्रपवपड्र" | "लपवपल" | ००५,०१०,५११ | पपतिपपतिंपपतिंपप |
| "छपवपछ" | "हुपवपहु" | ००६,०१०,६११ | पपथिपपथिंपपथिंपप |
| "ट्रपवपट्र" | "हूपवपहू" | ००७,०१०,७११ | पपदिपपदिंपपदिंपप |
| "ट्रपवपट्र" | "हूपवपहू" | ००८,०१०,८११ | पपधिपपधिंपपधिंपप |
| "ड्रपवपड्र" | "हूपवपहू" | ००९,०१०,९११ | पपनिपपनिंपपनिंपप |
| "द्वपवपद्व" | "हुपवपहु" | | पपपिपपपिंपपपिंपप |
| "द्रपवपद्र" | "हूपवपहू" | ०००.०१०.०११ | पपफिपपफिंपपफिंपप |
| "रूपवपरू" | "रूपवपरू" | ००१.०१०.१११ | पपबिपपबिंपपबिंपप |
| "हूपवपहू" | "रूपवपरू" | ००२.०१०.२११ | पपभिपपभिंपपभिंपप |
| "ळपवपळ" | "दुपवपदु" | ००३.०१०.३११ | पपमिपपमिंपपमिंपप |
| | "दूपवपदू" | ००४.०१०.४११ | पपयिपपयिंपपयिंपप |
| "क्तपवपक्त" | "दूपवपदू" | ००५.०१०.५११ | पपरिपपरिंपपरिंपप |
| "रूपवपरू" | | ००६.०१०.६११ | पपलिपपलिंपपलिंपप |
| "रूपवपरू" | | ००७.०१०.७११ | पपळिपपळिंपपळिंपप |
| "टृपवपटृ" | | ००८.०१०.८११ | पपविपपविंपपविंपप |
| "टृपवपटृ" | | ००९.०१०.९११ | पपशिपपशिंपपशिंपप |
| "ठृपवपठृ" | | | पपषिपपषिंपपषिंपप |
| "डृपवपडृ" | | | पपसिपपसिंपपसिंपप |

पपहिपपहिंपपहिंपप
 पपक्षिपपक्षिंपपक्षिंपप
 पपझिपपझिंपपझिंपप

pg 12/18

pg 13/18

पपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्घपपढ्ङपपढ्चप
पढ्छपपढ्जपपढ्झपपढ्झपपढ्ठपपढ्ठपपढ्डप
पढ्ढपपढ्णपपढ्ढतपपढ्थपपढ्दपपढ्धपपढ्नप
पढ्त्तपपढ्पपपढ्फपपढ्बपपढ्भपपढ्मपपढ्मप
पढ्द्रपपढ्द्रपपढ्दलपपढ्दळपपढ्दळपपढ्दवपपढ्दशप
पढ्दषपपढ्दसपपढ्दहपपढ्दकपपढ्दखपपढ्दगपपढ्दजप
पढ्दङपपढ्दढपपढ्दफपपढ्दयपप

पपण्कपपण्खपपण्गपपण्घपपण्ङपपण्चप
पण्छपपण्जपपण्झपपण्झपपण्ठपपण्ठपपण्डप
पण्ढपपण्णपपण्णतपपण्थपपण्दपपण्धपपण्नप
पण्त्तपपण्पपपण्फपपण्बपपण्भपपण्मपपण्मप
पण्द्रपपण्द्रपपण्दलपपण्दळपपण्दळपपण्दवपपण्दशप
पण्दषपपण्दसपपण्दहपपण्दकपपण्दखपपण्दगपपण्दजप
पण्दङपपण्दढपपण्दफपपण्दयपप

पपत्कपपपत्खपपपतापपपत्थपपपत्डपपपत्चपपपत्छप
पपत्जपपपत्झपपपत्ञपपपत्टपपपत्ठपपपत्डपपपत्ढपपपत्णाप
पत्तपपपत्थपपपत्दपपपत्थपपपत्तपपपत्तपपपत्पपपत्फप
पत्बपपपत्भपपपत्मपपपत्त्यपपपत्त्रपपपत्त्रपपपत्लपपपत्ळप
पत्ळपपपत्त्वपपपत्शपपपत्षपपपत्सपपपत्हपपपत्क्रपपपत्खप
पतापपपलपपपत्ङपपपत्ढपपपत्फपपपत्यपप

पपथ्कपपपथ्खपपपथापपपथ्घपपपथ्ङपपपथ्चपपपथ्छप
पथ्जपपपथ्झपपपथ्ञपपथ्टपपथ्ठपपथ्डपपथ्ढप
पथ्णपपपथ्णपपथ्णतपपथ्थपपथ्दपपथ्धपपथ्नपपथ्त्तप
पथ्पपपथ्फपपथ्बपपथ्भपपथ्मपपथ्मपपथ्मपपथ्मप
पथ्द्रपपथ्द्रपपथ्दलपपथ्दळपपथ्दळपपथ्दवपपथ्दशपपथ्दषप
पथ्दसपपथ्दहपपथ्दकपपथ्दखपपथ्दगपपथ्दजपपथ्दङप
पथ्दढपपथ्दफपपथ्दयपप

पपद्कपपपद्खपपपद्गपपपद्घपपपद्ङपपपद्चप
पद्छपपपद्जपपपद्झपपपद्ञपपपद्टपपपद्ठप
पद्डपपपद्ढपपपद्णपपपद्तपपपद्थपपपद्दपपपद्धप
पद्नपपपद्त्तपपपद्पपपपद्फपपपद्बपपपद्भपपपद्मप
पद्यपपपद्द्रपपपद्द्रपपपद्दलपपपद्दळपपपद्दळपपपद्दवप
पद्दशपपपद्दषपपपद्दसपपपद्दहपपपद्दकपपपद्दखप
पद्दगपपपद्दजपपपद्दङपपपद्दढपपपद्दफपपपद्दयपप

पपध्कपपपध्खपपपधापपपध्घपपपध्ङपपपध्चप
पध्छपपपध्जपपपध्झपपपध्झपपध्ठपपपध्ठपपध्डप
पध्ढपपपध्णपपपध्णतपपध्थपपध्दपपध्धपपध्नप
पध्त्तपपध्पपपध्फपपध्बपपध्भपपध्मपपध्मपपध्मप
पध्द्रपपध्द्रपपध्दलपपध्दळपपध्दळपपध्दवपपध्दशप
पध्दषपपध्दसपपध्दहपपध्दकपपध्दखपपध्दगपपध्दजप
पध्दङपपध्दढपपध्दफपपध्दयपप

पपन्कपपपन्खपपपनापपपन्घपपपन्ङपपपन्चपपपन्छप
पन्जपपपन्झपपपन्ञपपन्टपपन्ठपपपन्डपपपन्ढप
पन्णपपपन्तपपपन्थपपपन्दपपपन्थपपपन्तपपपन्तप
पन्फपपपन्बपपपन्भपपपन्मपपपन्त्यपपपन्त्रपपपन्त्रप
पन्ळपपपन्ळपपपन्वपपपन्शपपपन्षपपपन्सपपपन्हपपपन्क्रप
पन्खपपपनापपपन्जपपपन्ङपपपन्ढपपपन्फपपपन्त्यपप

पपत्कपपपत्खपपपतापपपत्घपपपत्ङपपपत्चपपपत्छप
पत्जपपपत्झपपपत्ञपपपत्टपपपत्ठपपपत्डपपपत्ढप
पत्णपपपत्तपपपत्थपपपत्दपपपत्थपपपत्तपपपत्तप
पपत्फपपपत्बपपपत्भपपपत्मपपपत्त्यपपपत्त्रपपपत्त्रप
पत्ळपपपत्ळपपपत्त्वपपपत्शपपपत्षपपपत्सपपपत्हपपपत्क्रप
पत्खपपपतापपपत्जपपपत्ङपपपत्ढपपपत्फपपपत्यपप

पपप्कपपप्खपपपपापपप्घपपप्ङपपप्चपपप्छप
पप्जपपप्झपपप्ञपपप्टपपप्ठपपप्डपपप्ढपपप्णाप
पप्तपपप्थपपप्दपपप्थपपप्तपपप्तपपप्पपपप्फप
पप्बपपप्भपपप्मपपप्यपपप्प्रपपप्प्रपपप्लपपप्ळप
पप्ळपपप्वपपप्शपपप्षपपप्सपपप्हपपप्क्रपपप्खप
पपापपप्जपपप्ङपपप्ढपपप्फपपप्यपप

पपफ्कपपपफ्खपपपफ्गपपपफ्घपपपफ्ङपपपफ्चप
पफ्छपपपफ्जपपपफ्झपपपफ्झपपफ्ठपपपफ्ठपपफ्डप
पफ्ढपपपफ्णपपपफ्णतपपफ्थपपफ्दपपपफ्धपपफ्नप
पफ्त्तपपपफ्पपपफ्फपपफ्बपपफ्भपपफ्मपपफ्मप
पफ्द्रपपफ्द्रपपफ्दलपपफ्दळपपफ्दळपपफ्दवपपफ्दशप
पफ्दषपपफ्दसपपफ्दहपपफ्दकपपफ्दखपपफ्दगपपफ्दजप
पफ्दङपपफ्दढपपफ्दफपपफ्दयपप

पपक्कपपक्खपपक्गपपक्घपपक्ङपपक्चपपक्छप
पक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डपपक्ढपपक्णाप
पक्तापपक्थपपक्दपपक्थपपक्तापपक्तापपक्ताप
पक्बपपक्भपपक्मपपक्मपपक्मपपक्मपपक्मप
पक्द्रपपक्द्रपपक्दलपपक्दळपपक्दळपपक्दवपपक्दशप
पक्दषपपक्दसपपक्दहपपक्दकपपक्दखपपक्दगपपक्दजप
पक्दङपपक्दढपपक्दफपपक्दयपप

पपभ्कपपभ्खपपभ्गपपभ्घपपभ्ङपपभ्चपपभ्छप
पभ्जपपभ्झपपभ्झपपभ्ठपपभ्ठपपभ्डपपभ्ढप
पभ्णपपभ्णतपपभ्थपपभ्दपपभ्थपपभ्मपपभ्मप
पभ्पपपभ्फपपभ्बपपभ्भपपभ्मपपभ्मपपभ्मप
पभ्द्रपपभ्द्रपपभ्दलपपभ्दळपपभ्दळपपभ्दवपपभ्दशप
पभ्दषपपभ्दसपपभ्दहपपभ्दकपपभ्दखपपभ्दगपपभ्दजप
पभ्दङपपभ्दढपपभ्दफपपभ्दयपप

पपम्कपपपम्खपपपमापपपम्यपपपमङ्गपपपम्यपपपम्यप
पमजपपपमझपपपमञपपपमटपपपमठपपपमडपपपमढप
पमणपपपमतपपपमथपपपमदपपपमथपपपमन्पपपमन्प
पम्फपपम्बपपपम्भपपपम्यपपपम्यपपम्यपपम्यप
पमळपपपमळपपपम्वपपपमशपपपमषपपपमसपपमहप
पम्कपपपम्खपपपमापपपमजपपपमङ्गपपपम्यपपपम्यप
पम्यपप

less common half-forms

पपदकपपदखपपदगपपदघपपदङपपदचपपदछप
पदजपपदझपपदञपपदटपपदठपपदडपपदढप
पदणपपदतपपदथपपददपपदधपपदनपपदमप
पदफपपदबपपदभपपदमपप पदयपपदलप
पदळपपदमपवपपदशपप पदषपपदसपपदहपप

पपद्धकपपद्धखपपद्धगपपद्धघपपद्धङपपद्धचप-
पद्धछप
पद्धजपपद्धझपपद्धञपपद्धटपपद्धठपपद्धडप-
पद्धढप
पद्धणपपद्धतपपद्धथपपद्धदपपद्धधपपद्धनप-
पद्धमप
पद्धफपपद्धबपपद्धभपपद्धमपप पद्धयपपद्धलप
पद्धळपपद्धपवपपद्धशपप पपद्धषपपद्धसपपद्ध-
हपप

पपदकपपदखपपदगपपदघपपदङपपदचप-
पदछप
पदजपपदझपपदञपपदटपपदठपपदडपपदढ-
ढप
पदणपपदतपपदथपपददपपदधपपदनपपदमप
पदफपपदबपपदभपपदमपप पदयपपदलप
पदळपपदपवपपदशपप पदषपपदसपपदह-
पप

पपद्रकपपद्रखपपद्रगपपद्रघपपद्रङपपद्रचप
पद्रछपपद्रजपपद्रझपपद्रञपपद्रटपपद्रठप
पद्रडपपद्रढपपद्रणपपद्रतपपद्रथपपद्रदप
पद्रधपपद्रनपपद्रमपपद्रफपपद्रबपपद्रभपपद्रमप
पपद्रयपपद्रलपपद्रळपपद्रमपवपपद्रशप
पपद्रषपपद्रसपपद्रहपप

पपरकपपरखपपरगपपरघपपरङपपरचप
परछपपरजपपरझपपरञपपरटपपरठप
परडपपरढपपरणपपरतपपरथपपरदपपरधप

परञपपरमपपरमपपरमपपरमपपरमप
परमपपरमपपरमपपरमपपरमपपरमप
परमपपरमपपरमपपरमप

पपगकपपगखपपगगपपगघपपगङपपगचपपगछप
पगजपपगझपपगञपपगटपपगठपपगडपपगढप
पगणपपगतपपगथपपगदपपगधपपगनपपगमप
पगफपपगबपपगभपपगमपप पगयपपगलपपगळप
पगमपवपपगशपप पगषपपगसपपगहपप

पपघकपपघखपपघगपपघघपपघङपपघचपपघछप
पघजपपघझपपघञपपघटपपघठपपघडपपघढप
पघणपपगतपपगथपपगदपपगधपपगनपपगमप
पघफपपघबपपघभपपघमपप पघयपपगलपपगळप
पघमपवपपघशपप पघषपपघसपपघहपप

पपचकपपचखपपचापपचघपपचङपपचचपपचछप
पचजपपचझपपचञपपचटपपचठपपचडपपचढप
पचनापपचतपपचथपपचदपपचधपपचनपपचमप
पचफपपचबपपचभपपचमपपचयपपचलपपचळप
पचमपवपपचशपपचषपपचसपपचहपप

पपजकपपजखपपजापपजघपपजङपपजचपपजछप
पजापपजझपपजञपपजटपपजठपपजडपपजढप
पजाणपपजातपपजथपपजदपपजधपपजनपपजमप
पजफपपजबपपजभपपजमपपजयपपजलपपजळप
पजमपपजमपवपपजशपपजषपपजसपपजहपप

पपझकपपझखपपझगपपझघपपझङपपझचप
पझछपपझजपपझझपपझञपपझटपपझठपपझडप
पझढपपझणपपझतपपझथपपझदपपझधपपझनप
पझमपपझमपपझबपपझभपपझमपप पझयप
पझलपपझळपपझमपवपपझशपपझषपपझसप
पझहपप

पपञकपपञखपपजापपञघपपञङपपञचप
पञछपपञजपपञझपपञञपपञटपपञठप
पञडपपञढपपञणपपञतपपञथपपञदपपञधप
पञनपपञमपपञफपपञबपपञभपपञमपपञयप
पञलपपञळपपञमपवपपञशपप पपञषपपञसप
पञहपप

पपणकपपणखपपणापपणघपपणङपपणचपपणछप
पणजपपणझपपणञपपणटपपणठपपणडपपणढप
पणाणपपणतपपणथपपणदपपणधपपणनपपणमप
पणफपपणबपपणभपपणमपप पणयपपणलप
पणळपपणमपवपपणशपप पणषपपणसपपणहपप

पपककपपकखपपकापपकघपपकङपपकचपपकछप
पकापपकापपकापपकटपपकठपपकडपपकढप
पकाणपपकातपपकथपपकदपपकधपपकनपपकमप
पकाफपपकाबपपकाभपपकमपपकयपपकलप
पकळपपकमपवपपकशपप पकषपपकसपपकहपप

पपककपपकखपपकापपकघपपकङपपकचपपकछप
पकापपकापपकापपकटपपकठपपकडपपकढप
पकाणपपकातपपकथपपकदपपकधपपकनपपकमप
पकाफपपकाबपपकाभपपकमपप पकयपपकलप
पकळपपकमपवपपकशपप पकषपपकसपपकहपप

पपककपपकखपपकापपकघपपकङपपकचपपकछप
पकापपकापपकापपकटपपकठपपकडपपकढप
पकाणपपकातपपकथपपकदपपकधपपकनपपकमप
पकाफपपकाबपपकाभपपकमपप पकयपपकलप
पकळपपकमपवपपकशपप पकषपपकसपपकहपप

पपककपपकखपपकापपकघपपकङपपकचपपकछप
पकापपकापपकापपकटपपकठपपकडपपकढप
पकाणपपकातपपकथपपकदपपकधपपकनपपकमप
पकाफपपकाबपपकाभपपकमपप पकयपपकलप
पकळपपकमपवपपकशपप पकषपपकसपपकहपप

पपक्रपपखपपप्रापपधपपहःपपधपपष्ठप
पजपपझपपञपपटपपठपपहपपहपपणाप
पतपपथपपदपपधपपनपपमपपक्रपपबप
पभपपमपप पपयपपलपपळपपमपवप
पशपप पपषपपसपपहपप

पपक्रपपखपपप्रापपधपपहःपपक्रप
पष्ठपपजपपझपपञपपटपपठप
पहपपहपपणपपतपपथपपदपपधप
पनपपमपपक्रपपबपपभपपमपप
पयपपलपपळपपमपवपपशपप
पषपपसपपहपप

पपक्रपपखपपप्रापपधपपहःपपधपपष्ठप
पजपपझपपञपपटपपठपपहपपहप
पणपपतपपथपपदपपधपपनपपमपपक्रप
पबपपभपपमपप पपयपपलपपळपपमपव
पशपप पपषपपसपपहपप